तुरुक़ व असानीदे हदीष

“يا فاطمة إن الله ليغضب لغضبك ويرضى لرضاك”

(या फाति़मा (رضی اللہ عنہا) ! बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है ।)

मुरत्तिब
खुसरो क़ासिम

रस्मुल खत हिन्दी
डो. शहेज़ादहुसैन काज़ी

तुरक़ व असानीदे

ह़दीष

"يا فاطمة إن الله ليغضب لغضبك ويرضى لرضاك"

(या फ़ातिमा इन्नल्लाह ल-यग़्द़बु लि-ग़द़बिकि व-यरद़ा लि-रिद़ाकि)

(अय फाति़मा(ﷺ) ! बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है ।)

मुरत्तिब :
ख़ुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी :
डॉ. शहेज़ाद क़ाज़ी

किताब का नाम : तुरुक व असानीदे ह़दीष

“يا فاطمة إن الله ليغضب لغضبك ويرضى لرضاك”

मुरत्तिब : ख़ुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी : डॉ. शहेज़ाद क़ाज़ी

नाशिर : इमाम जाफर सादिक फाउन्डेशन (एहले सुन्नत वल जमाअत)

मोडासा, गुजरात.

मिलने का पता : इमाम जाफर सादिक फाउन्डेशन (एहले सुन्नत वल जमाअत)

मोडासा, गुजरात.

अर्ज़े नाशिर

अल्लाह ﷻ ! के नाम से शुरु कि जो बडा महरबान बख़्शनेवाला है, नहीं है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ﷻ ! के और मुहम्मद ﷺ अल्लाह ﷻ के रसूल है। अल्लाह ﷻ ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से **"तुरुक़ो असानीदे हदीष"** किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया।

एक ऐसा भी वक़्त था जब मुसलमान हुक्मरानों ने अहले बैते अत्हार علیهم السلام, ख़ास कर बनू फातिमा पर बडे अर्से तक वो ज़ुल्म किया जो शायद ही किसी नबी की आल पर उस नबी की उम्मत ने किया हो । ज़ुल्म आज भी हो रहा है सिर्फ तरीक़ा बदला है, उस ज़माने में आले मुहम्मद ﷺ को जिस्मानी तक़लीफे दी जाती थी, मिम्बरो पर उलमा को आले मुहम्मद ﷺ को बुरे अल्फाज़ो से याद करने पर मजबूर किया जाता था, मुहद्दिषीन को उनसे रिवायत लेने पर सजाए दी जाती थी, कहीं इमामे आज़म अबू हनीफा رحمة الله علیه को इमाम नफ्सुसझकिया علیه السلام की मुहब्बत की वजह से कैद किया गया, तो कहीं इमाम शाफीई رحمة الله علیه पर शिया-राफ़ज़ी के फतवे लगा कर उन्हें जलील किया गया, कहीं इमाम निसाई رحمة الله علیه को मौला अ़ली علیه السلام की मुहब्बत की वजह से शहीद किया गया तो कही इमाम हाकिम رحمة الله علیه जैसे मुहद्दिषीन पर शिया के फतवे लगाकर उनके मिम्बर को तोड दिया गया । एक ज़माने तक ये चलता रहा मगर अहले बैत علیهم السلام के गुलाम कभी अम्मार बिन यासिर رضی الله عنه बनकर मैदाने जंग में आये तो कही अबू ज़र رضی الله عنه की तरह रज़ा-ए-इलाही में शहीद हुए । कहीं हबीब इब्न मुजाहिर رضی الله عنه और हुर्र رضی الله عنه बनाकर करबला में आले मुहम्मद ﷺ पर जान लूटाने आए तो कहीं इल्म के मैदान में इमाम निसाई رحمة الله علیه, इमाम हाकिम رحمة الله علیه, इमाम बुख़ारी رحمة الله علیه, इमाम अबू हनीफा رحمة الله علیه, इमाम शाफीई رحمة الله علیه बनकर आए तो कहीं दीन की तब्लीग में ख्वाजा गरीब नवाज رحمة الله علیه, निजामुद्दीन औलिया رحمة الله علیه, वारिसे पाक رحمة الله علیه, मख्दुम माहिम رحمة الله علیه और मख्दुम जलालुद्दीन जहाँगश्त رحمة الله علیه बनकर आए । वक्तन फ वक्तन हर मैदान में गुलामानें अहले बैत علیهم السلام नासबियत व खारजियत के मुकाबले में आतें रहें, अपनी ख़िदमात देते रहे और अपनी जाने भी कुर्बान करते रहे ।

इस ज़माने में भी नासबियत और ख़ारजियत तमाम फिर्क़ो में अपना सर उठा रही है बल्कि कहेना चाहुँगा उरुज़ पर पहुँच रही है, फर्क सिर्फ इतना है जो नासबियत

की डोर कल सल्तनत के बादशाहो ने अपनी बादशाहत की लालच में संभाली थी और उलमा मुहद्दिषीन की गरदनों पर तलवारें रखकर लोगों से फजाइले अह्ले बैत عليهم السلام छुपाकर, बुग्ज़े अह्ले बैत عليهم السلام को आम करवा रहे थे वो ही नासबियत की बागडोर आज कल कुछ फिर्कापरस्त नाम निहाद पीर, उलमा व कुछ तन्जीमों नें संभाल ली है । कल के उलमा मजबूरी में औलाद व जान-माल के डर से फजाइले अह्ले बैत عليهم السلام छुपा रहे थे और उनके बुग्ज़ में कुछ ने तो मौज़ूअ अहादीष तक घडनी शुरु कर दी थी, तो आज भी ऐसा ही हो रहा है फर्क सिर्फ इतना है आज के इस Democracy (जम्हूरियत) के ज़माने में उलमा की जान को या माल व औलाद को तो ख़तरा नहीं है मगर दुन्यवी लालच चाहे वो शोहरत पाने की हो या दौलत की हो , या चन्द फित्नापरस्त लोगों को खुश करने के लिए हो, इसी वजह से आज के उलमा की एक जमाअत फज़ाइले अह्ले बैत عليهم السلام नहीं बता रही है बल्कि अवाम को कुर्आन व अह्ले बैत عليهم السلام से दूर किया जा रहा है । कुर्आन के तर्जुमा व तफसीर से उम्मत को दूर किया जा रहा है और मुहब्बते अह्ले बैत عليهم السلام पर शिया-राफ़ज़ी के फतवे लगाये जा रहे है, जबकि मुतवातिर ह़दीषे ग़दीर से रसूलल्लाह ﷺ का कौल साबित है कि नबी-ए-करीम ﷺ ने फरमाया,

مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ

"में जिसका मौला हूँ अली (रदी) भी उसके मौला है"

(अल मुजमुलकबीर, लि-तबरानी) (कश्फुल अस्तार, लि-हैस़मी) (रावी सिक्का)

زيد بن أرقم قال: لما رجع رسول الله ﷺ عن حجة الوداع، ونزل غدير خم(٢١٨) أمر بدوحات(٢١٩) فقممن(٢٢٠) ثم قال: «كأني قد دُعيت، فأجبتُ، [و](٢٢١) إني قد تركت فيكم الثقلين(٢٢٢) أحدهما أكبر من الآخر: كتاب الله وعترتي(٢٢٣) أهل بيتي، فانظروا كيف تخلفوني فيهما، فإنهما لن يتفرقا حتى يردا على الحوض» ثم قال: «إن الله مولاي، وأنا ولي كل مؤمن» ثم أخذ بيد علي، فقال: «من كنتُ وليه، فهذا وليه، اللهم وال من والاه، وعاد من عاداه» فقلت لزيد: سمعته من رسول الله ﷺ؟

मुख़्तसर हदीस :

"हो सकता है कि मुझे बुलाया जाए तो मैं कुबूल करुं, मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी (अज़ीम) चीजें छोड कर जा रहा हूँ, इनमें से एक दूसरे से बढकर है, एक अल्लाह ﷻ की किताब और दूसरे मेरी इतरत या'नी मेरे अह्ले

बैत ﷺ, तो तुम सोच लो कि इन दोनों के बारे में मेरी कैसी जाँनशीनी करोगे, ये दोनों आपसमें जुदा नहीं होंगे ता आँ कि हौज पर आकर मुझ से मिले ।"

(इमाम निसाई फी ख़साइस अमीरुल मोमिनीन अ़ली बिन अबी तालिब ﷺ)

अब कारिइन आपको सोचना है कि हमारे नबी ﷺ तो हमे कुर्आन और अह्ले बैत ﷺ से वाबस्तगी का हुक्म दे रहे है और नाम निहाद पीर व उलमा व कुछ तन्ज़ीमों की एक जमाअत फिर्कापरस्ती फैलाकर इनसे अवाम को दूर रखने का काम अन्जाम दे रहे है । आज माहौल ये बनाया जा रहा है कि जो अह्ले बैत ﷺ से मुहब्बत करे उसे शिया, राफ़ज़ी जैसे अल्फाज़ो से उसे नवाज़ा जाता है, बेचारी अवाम को ये तक बताया नहीं जाता की सिर्फ मुहब्बत व फज़ीलते अह्ले बैत ﷺ से कोई राफ़ज़ी नहीं बनता बल्कि जो सहाबा-ए-किराम की शानमें लान व तान करता है उसे राफ़ज़ी कहा जाता है । मैं इस बात पर ज़्यादा लिखकर अपनी बात को लम्बा नहीं करना चाहता जो हक था वो बयान करने की कोशिश की है । अल्लाह ﷻ हम सबको नेक हिदायत दे आमीन....

इस छोटे से रिसाले में अह्ले बैत ﷺ, अह्ले मुबाहिला ﷺ की वो शख़्सियत, नबी ﷺ की बेटी, वसी की ज़ौजा, सिब्तैन की माँ, इमामों की दादी, यौम-ए-जज़ा में अर्श के सामने फरियाद करनेवाली, आख़िरत और दुनिया की औरतों की सरदार, अली मुर्तजा ﷺ की अहलिया, मुन्तख़ब शख़्स की माँ, मुस्तफा की साहबज़ादी, जिसकी तारीफ इन्जील में की गई, मरियम ﷺ के हमपल्ला, हर ख़ैर का इल्म रखनेवाली, सबसे मुकर्रम मुहम्मद ﷺ की बेटी, साहिब-ए-वही व कुर्आन का मोती, जिसके दादा ख़लील, सय्यिदा, तय्यिबा, ताहिरा, बतूल, फ़ातिमा ज़हरा ﷺ की शान में हदीषे मुबारका:

"يا فاطمة إن الله ليغضب لغضبك ويرضى لرضاك"

(अय फातिमा(ﷺ) ! बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है ।)

के अलग अलग तुरुक व असानीद प्रो. ख़ुसरो कासिम साहब ने इकट्ठा किये है । बेशक वो लोग जो कहते है कि **"सय्यिदा फातिमा ﷺ को भी कल कयामत में नबी की बेटी होना काम ना आएगा"** (मआज़ल्लाह) वो इस छोटे से रिसाले से इतना जान लें कि सय्यिदा ज़हरा ﷺ तो वो शख़्सियत है **"जिसके गज़बनाक होने से अल्लाह ﷻ गज़बनाक होता है और जिसके ख़ूश होने से अल्लाह ﷻ ख़ूश होता है ।"** अब ऐसे लोगों को चाहिये की वो अपनी इस्लाह करे और अह्ले बैत

की गुस्ताख़ी करने से परहेज़ करे। सय्यिदा ज़हरा-ए-पाक की शान को ख़ुदा ने एसी बलन्द की है कि हम जैसे गुनहगार, ख़ताकार, कमअक़्ल इन्सानो की हैसियत ही नहीं की हम उनकी शान बयान करे कि जिनके बारे में **हुज़ूर नबी-ए-करीम फरमाते है।**

"**कयामत के दिन एक निदा देनेवाला पर्दे के पीछे से आवाज देगा। ए अहल-ए-महशर। अपनी निगाहें झुका लो ताकि फातिमा बिन्ते मुस्तफा गुज़र जाए।**"

(मुस्तदरक हाकिम रकम ४७२८) (असद-उल-गाबा, जिल्द-७, सफा-२२०)

अल्लाह हमको, हमारी ता-कयामत तक की नस्लों को सय्यिदा फातिमा ज़हरा के बच्चों की गुलामी अता करे. आमीन...

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से दुआ है कि मेरी इस काविश को कुबूल फरमाये और मेरी इस किताब के प्रकाशन का सवाब तमाम उम्मते रसूलल्लाह के मोमिन व मोमिनात की रुहो को व मेरी नानी मोहतरमा मरहुमा ज़ुबैदाख़ातुन बिन्ते हुसैनमियाँ चौहाण की जिन्हों ने मुझमें बचपन से मुहब्बते अह्ले बैत शिख़ायी, उनकी रुह को अता फरमाये और उनकी मग़फिरत फरमाये, सय्यिदा जहरा-ए-पाक के सदके उनके गुनाहों को बख़्श दे और उनको सय्यिदा जहरा-ए-पाक की कनीज़ो में शुमार करें। आमीन....

इस बीच प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब से मेरी मुलाकात और उनकी किताबो का हिन्दी, गुजराती ज़बान में तर्जुमा के काम में हौंसला अफज़ाई करने वाले **"ख़तीब-ए-अह्ले बैत मुफ्ती शफ़ीक़ हनफी कादरी साहब (मुम्बई)"** का तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूँ और जब भी किताब में किसी अरबी या उर्दू अल्फाज़ के हिन्दी-गुजराती मा'ना में Confuse हुआ हूँ तब तब मेरी मदद पर हर वक्त आमदा रहने वाले **"दीवान मोहसीनशाह (सांसरोद,गुजरात)"** का भी शुक्रगुजार हूँ।

अल्लाह ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलल्लाह व अह्ले बैत की शफाअत नसीब फरमाए !

डॉ. शहजादहुसैन यासीनमियां काजी
२० जमादील आख़िर हिजरी 1440

तआरुफे मुरत्तिब

आज हमारी आँखों के सामने एक ऐसा ज़माना गुज़र रहा है कि जिसमे नासबियत और ख़ारजियत उरुज़ पकड़ रही है, बुग्ज़े मौला अली عليه السلام को कुछ फिरका परस्त लोंगों ने खुद के मस्लक का अहम हिस्सा बना दिया है। ऐसे हालात में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के Mechanical Engineering Department के Assistant Professor हज़रत ख़ुसरो क़ासिम साहब ने जिम्मा उठाया कि ऐसे नासबी, ख़ारजी हमलो का किताबी शक्लो में जवाब दिया जाए। मस्लके अहले सुन्नत में मुहब्बत-ए-अहले बैत عليهم السلام और मुहब्बत-ए-अली عليه السلام ये शीयत नहीं है, ये राफ़ज़ीयत नहीं है बलकि ये तो अहले सुन्नत का १४०० साल से चला आ रहा मजबूत अक़ीदा है, दीन का मजबूत सतून है। ये बात प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने "शान-ए-अहले बैत عليهم السلام" में सिर्फ २० (बीस) सालो में १८० से भी ज़्यादा किताबे लिखकर बता दिया है। प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने इन किताबो में सिर्फ और सिर्फ अहले सुन्नत की किताबो के हवाल पेश किये जो मस्लके अहले सुन्नत के १४०० साल के मुफस्सिरीन, मुहद्दिसीन, मुअर्रिख़ीन मुहक़्क़ीन का इकट्ठा किया हुआ सरमाया है। १४०० साल के इस समन्दर को एक जगह पर इकट्ठा करने का काम प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने किया हैं। प्रोफेसर साहब ने खुद को अहले सुन्नत कहलाने वाले अहल-ए-हदीस और अहल-ए-देवबन्द मस्लक के उलमा व मुहद्दिसीन की किताबो के हवाले भी पेश किये है - जैसे कि अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी।

आज के इस पुरफितन दौर में मुहब्बते अहले बैत عليهم السلام के अलम को बुलन्द करनेवाले ख़ुसरो क़ासिम साहब की पैदाइश सन १९६३ में उस ख़ानदान में हुई जिस ख़ानदान के कई नामी उलमा ने दीन के लिए अपनी खिदमत अंजाम दी है। प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब 'सिद्दीकी' ख़ानदान से ता'ल्लुक रखते है। आपने अलीगढ मुस्लिम युनिवर्सिटी से ही B.Tech (Bachelor of Technology.) और M.Tech (Master of Technology) की पढाई की। प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब को सय्यिदी शैख़ मुहम्मद बिन यहया निनोवी (सादाते हुसैनी) से हदीस बयान करने की सनद भी हासिल हैं जो इमाम अली रज़ा عليه السلام से मिलती है जिसे इस गुलाम ने अपने आँखों से देखी हैं। अल्लाह ﷻ ! उनके इस काम का बदला अता फरमाए

और ब-रोज-ए-कयामत उनको, उनकी नस्लों को खातमुन्नबी रसूलल्लाह ﷺ के हाथो जाम-ए-कौसर नसीब फरमाये .... आमीन।

प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब की तरतीबदा किताबो की सबसे बडी खूबी येह है कि इसमे अहले बैत عليهم السلام के फज़ाईल सिर्फ अहले सुन्नत वल जमाअत की किताबों से ही नक्ल किये गये है जो अहले सुन्नत की अवाम के लिए एक ऐसा तोहफा है जिसको अहले सुन्नत के मुहद्दिसीन, मुअर्रिखीन, मुफस्सिरीन कई सालों पहले तय्यार कर के गए है।

ये उन लोगों के मुंह पर तमाचा है जो अकसर ये कहकर अवाम को गुमराह करते है कि अहले बैत عليهم السلام की मुहब्बत को एक हद तक ही रखा जाये क्यूंकि फ़जीलते अहले बैत عليهم السلام तो शिया-राफ़ज़ी के किताबो में है ऐसे लोगों को प्रो. खुसरो क़ासिम साहब की किताबे जो कुतुबे अहले सुन्नत के हवालो से भरी पडी है, उनको पढकर खुद की इस्लाह करनी चाहिये।

अझ खादीमे दरे झहरा-ए-पाक عليها السلام
डॉ. शहजादहुसैन यासीनमियां काजी

अर्ज़े मुरत्तिब

इब्ने तैमिया अपनी किताब "मिन्हाजुस्सुन्नाह" में लिखते हैं :

"ورووا جميعاً أن النبی ﷺ قال: یا فاطمة ! إن الله یغضب لغضبك ویرضی لرضاك، فهذا کذب منه، ماروواهذا عن النبی ﷺ، ولا یعرف هذا فی شئ من کتب الحدیث المعروفة ولا له إسناد معروف عن النبی ﷺ، لا صحیح ولا حسن"۔

(मिन्हाजुस्सुन्नाह, जिल्द-४, सफा-२४८)

इब्ने तैमिया कहते हैं के उन तमाम रावीयों ने येह ह़दीष रिवायत की है के नबी-ए-करीम ﷺ ने फरमाया : **"अय फातिमा (رضی اللہ عنہا) ! बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ होता है और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है।"** ये झूट है, नबी-ए-करीम ﷺ से ऐसी रिवायत नहीं है, और ना ही ह़दीष की मशहूर किताबों में इस का ज़िक्र है और ना ही इस की कोई मा'रूफ सनद है, ना स़ह़ीह़ और ना ह़सन।

इब्ने तैमिया का अहले बैते अतहार से बुग़ज़ो अ़दावत मशहूरो मा'रूफ है, जिस को ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर رحمۃ اللہ علیہ ने भी 'अद्दुररुल कामिनाह' में नकल किया है। 'मिन्हाजुस्सुन्नाह' में उन्हों ने फज़ाईले अहले बैत की सारी सहीह और मुतवातिर अह़ादिष तक को मौज़ूअ़ करार दे दिया है।

सैय्यिदा फातिमा رضی اللہ عنہا के फज़ाइल में कषरत से अह़ादीषे मरवी हैं जिन में से एक येह है. इस ह़दीष के शवाहिद में से वोह मुतवातिर ह़दीष भी है जिसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है. "फातिमा رضی اللہ عنہا मेरा टुकडा है, जिसने

उसे ग़ज़बनाक किया उसने मुझे ग़ज़बनाक किया" । अब क़ारिईन ख़ूद फैसला कर लें के जिस के उपर मुस्तफा ﷺ ग़ज़बनाक होंगे, तो क्या अल्लाह ﷻ उस के उपर ग़ज़बनाक नहीं होगा ।

येह एक मशहूर ह़दीष है, जिसे मुख़्तलिफ ह़ुफ्फाज़ और मुह़द्दिषीन ने अपनी कुतुब में नकल किया है, जिन में से कुछ येह हैं :

१. अबू ज़र अराज़ी رحمة الله
२. इब्ने अबू ह़ातिम राज़ी رحمة الله
३. अबूल क़ासिम तबरानी رحمة الله
४. ह़ाकिम नेसापूरी رحمة الله
५. अबू नोईम अस्फहानी رحمة الله
६. अबूल क़ासिम इब्ने अ़साकिर رحمة الله
७. मुत्तक़ी हिन्दी رحمة الله
८. अबूल हुज्जाज मज़ी رحمة الله
९. इब्ने अषीर जज़री رحمة الله
१०. जलालुद्दीन सुयूती رحمة الله

हम ने इस मुख्तसर किताबचे में इस रिवायत के मुख्तलिफ तुरुक और असानीद जमा' किये हैं । अल्लाह ﷻ से मेरी दुआ है के तादमे आख़िर इसी त़रह़ में फज़ाइले अहले बैते अत़हार की इशाअ़त करता रहूं । आमीन

ख़ुसरो क़ासिम

Assistant Professor
Mechanical Engineering Department,
A.M.U. Aligarh

بسم الله الرحمن الرحيم

हदीष

"يا فاطمة إن الله ليغضب لغضبك ويرضى لرضاك"

(अय फाति़मा (ﷺ) ! बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़

और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है।)

के मुख़्तलिफ अल्फाज़ व तुरुक

(१) (कन्ज़ अल उम्माल - अल मुत्तक़ी अल हिन्दी - जिल्द-१२, सफा-१११)

34237إن الـله عز وجل ليغضب لغضب فاطمة ويرضى لرضاها

(الديلمى عن على)

अल्लाह तआ़ला ह़ज़रत फातिमा ﷺ के ग़ुस्सा होने से नाराज़ और उनके ख़ूश होने से ख़ूश होता है ।

34238يـا فـاطمة! إن الله ليغضب لغضبك ويرضى لرضاك.

अय फाति़मा ! बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है ।

(ع، طب، ك وتعقب (1) وأبو نعيم فى فضائل الصحابة وابن عساكر عن على).

(२) (मजमउल ज़वाइद अल हैस़मी, जिल्द-९, सफा-२०३)

وعن على قال قال رسول الله ﷺ:إن الله يغضب لغضبك ويرضى لرضاك. رواه الطبراني واسناده حسن.

हज़रत अ़ली رضی اللہ عنہ से रिवायत है के रसूलल्लाह ﷺ ने फरमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है।

(३) (अल आहा़द वल मषानी अल ज़हा़क, जिल्द-५, सफा-३६३)

(2959) حدثنا عبدالله بن سالم المفلوج وكان من خيار الناس نا حسين بن زيد بن على بن الحسين بن على بن أبى طالب عن عمر بن على عن جعفر بن محمد عن أبيه عن على بن الحسين بن على عن على رضى الله عنه عن النبى ﷺ أنه قال: فاطمة ! ان الله يغضب لغضبك ويرضى لرضالك.

हज़रत अली رضی اللہ عنہ से रिवायत है के रसूलल्लाह ﷺ ने फरमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होते से ख़ूश होता है।

(४) (अल मुअजमुल कबीर अल तबरानी, जिल्द-१, सफा-१०८)

(182) حدثنا محمد بن عبدالله الحضرمى حدثنا عبدالله بن محمد بن سالم القزاز حدثنا حسين بن زيد بن على عن على بن عمر بن على عن جعفر بن محمد عن أبيه عن على بن الحسين عن الحسن بن على رضى الله رضى الله تعالىٰ عنه عن على رضى الله تعالىٰ عنه قال قال رسول الله ﷺ لفاطمة رضى الله تعالىٰ عنها أن الله يغضب لغضبك ويرضى لرضاك.

हज़रत अली ﷻ फरमाते हैं के रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रते फातिमा ﷻ से फरमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे खूश होने से खूश होता है।

(५) नजमु दुररिस्सीमतैन - अल ज़रनदी अल हन्फी, सफा-१७७-१७८)

قول النبى لفاطمة: إن الله يغضب لغضبك ويرضى لرضاك .
عـائشة (رض) قـالـت: كان رسول الله (ﷺ) يكثر من تقبيل فـاطـمة (رض) فـقلت يا رسول الله (ﷺ) أراك تكثر من تقبيل فاطمة فـقـال: أنـى إذا اشـتـقـت إلـى رائحة الجنة قبلتها، وقد روى ابن عباس (رض) ان الـنبى (ﷺ) قال: ريح الولد من ريح الجنة، عائشة (رض) أنها سـألـت أى الـناس كان أحب إلى رسول الله (ﷺ) قالت: فاطمة، فقيل: من الرجال قالت زوجها.

नबी-ए-करीम ﷺ का कौल सैय्यिदा फातिमा ﷻ के लिये के अल्लाह उन के ग़ज़ब से ग़ज़बनाक और उन की रज़ा से राज़ी होता है।

हज़रत आ़येशा ﷻ फरमाती हैं के रसूलल्लाह ﷺ हज़रते फातिमा ﷻ को बहोत ज़ियादा बोसा लिया करते थे, मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ﷺ ! मैं आप को देखती हूं के आप फातिमा ﷻ को बहोत बोसा लेते हैं? आप ﷺ ने फरमाया : जब मुझे जन्नत की ख़ूश्बू का इश्तियाक़ होता है, मैं फातिमा (ﷻ) को बोसा ले लेता हूं।

हज़रत इब्ने अब्बास ﷻ से रिवायत किया गया है के नबी-ए-करीम ﷺ ने फरमाया : अवलाद की ख़ूश्बू जन्नत की ख़ूश्बू में से है।

हज़रत आ़येशा ﷻ से पूछा गया के "रसूलल्लाह ﷺ को सब से ज़ियादा कौन महबूब था?" फरमाया : "हज़रते फातिमा ﷻ," पूछा गया : "मर्दों में?" फरमाया : "फातिमा ﷻ के शौहर।"

روى علـى بـن عـمـر بـن عـلـى عن جعفر بن محمد عن أبيه عن جـده عـن الـحسـيـن بـن عـلـى عن على بن أبى طالب (رض) ان النبى (ص) قال لفاطمة: ان الله يغضب لغضبك.

हज़रत अ़ली ﷺ से रिवायत है के रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रते फातिमा ﷺ से फरमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ होता है ।

(६) (मजमाउल रिजाल व अल ह़दीष -मुह़म्मद ह़यात अल अन्सारी, जिल्द-१, सफा-११७)

وقـال الـطـبـرانـى: حـدثـنـا بشـر بن موسى ومحمد بن عبدالله الـحـضـرمى قالا: حدثنا عبدالله بن سالم قال: حدثنا حسين بن زيد بن عـلـى وعلى بن عمر بن على، عن جعفر بن محمد، عن أبيه، عن على بن الـحسيـن، عن الحسين بن على، عن على عليهم السلام قال: قال رسول الـلـه ﷺ لـفـاطـمة الـزهـراء سـلام الـلـه عليها: "إن الله يغضب لغضبك ويرضى لرضاك" .

हज़रत अ़ली ﷺ फरमाते हैं के रसूलल्लाह ﷺ ने ह़ज़रत फातिमा ﷺ से फरमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है ।

وقـال الـحـاكم: أبو العباس محمد بن يعقوب "ثنا الحسن بن على بن عفان العامرى وأخبرنا محمد بن على بن دحيم الكوفة" ثنا أحمد بن حـاتـم بـن أبى غزرة قالا: ثنا عبدالله بن محمد بن سالم، ثنا حسين بن زيـد بـن على، عن عمر بن على، عن جعفر بن محمد، عن أبيه، عن على بن الحسين، عن أبيه، عن على عليه السلام قال:

قـال رسـول الـلـه ﷺ لـفاطمة الزهراء سلام الله عليها: ان الله ليغضب لغضبك ويرضى لرضاك" ("المستدرك" (154/3)

हज़रत अ़ली ﷺ फरमाते हैं के रसूलल्लाह ﷺ ने ह़ज़रत फातिमा ﷺ से फरमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है ।

هـذا حـديـث حسـن صحيح صححه الحاكم وحسنه الهيثمى وله شـاهـد مـن حديث عبدالله بن الزبير، والمسور بن مخرمة وأصله ثابت فى الصحيحين.

हाकिम رحمۃ اللہ علیہ फरमाते हैं से येह ह़दीष ह़सन सह़ीह़ है, हैसमी رحمۃ اللہ علیہ ने इसे ह़सन कहा है और इस की शाहिद ह़दीष भी है और इस की असल स़ह़ीह़ैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में भी मौजूद है।

(७) (तारीख़ु मदिनतु दिमश्क इब्ने असाकिर, जिल्द-३, सफा-१५५-१५६)

أخبـرنـا أبـو مـنصور عبدالرحمن بن محمد بن عبدالواحد بن الـحسين أبو الحسين محمد بن على بن محمد بن عبيد الله بن المهتدى أنبـأنـا أبـو حـفـص عـمـر بـن أحـمـد بن عثمان أنبأ عبدالله بن محمد البغوى أبنأنا أبو معمر الهذلى أنبأنا ابن عيينة عن عمرو بن دينار عن ابـن أبـى مـليـكة عن المسور بن مخرمة أن رسول الله (ﷺ) قال: إنما فـاطـمة بـضـعـة مـنى يؤذينى ما آذاها ويغضبنى ما أغضبها۔ انتهى رواه مسلم فى صحيحه عن أبى معمر۔

ह़ज़रत मसूर बिन मख़्रमा رضی اللہ عنہ फरमाते हैं के रसूलल्लाह ﷺ ने फरमाया : फातिमा رضی اللہ عنہا मेरे जिगर का टुकडा है, जिस चीज़ से इसे तकलीफ होती है, उस से मुझे भी तकलीफ होती है और जिस चीज़ से इसे नाराज़ी होती है, उस चीज़ से मुझे भी नाराज़गी होती है।

أخبرنا أبو القاسم على بن عبدالله بن إبراهيم الحسينى أنبأنا أبو الحسين محمد بن عبدالرحمن بن عثمان التميمى أنبأنا القاضى أبو بكر يوسف بن القاسم الميانجى ،أخبرنا أبو محمد هبة الله بن سهل بن عـمـر الـفـقـيـه أنبـانـا أبو عثمان سعيد بن محمد العدل أنبانا أبو عمرو محمد بن احمد الحيرى قالا أنبانا أبو يعلى الموصلى أنبانا عبدالله بن محمد بن سالم الحيرى المفلوج كوفى نا حسين بن زيد عن على بن عمر بـن على عن جعفر بن محمد عن أبيه عن جده عن الحسين بن على عن

على أن النبى (ﷺ) قال لفاطمة :

يـا فـاطـمة إن الـله تبارك وتعالىٰ ليغضب وقال الحيرى يغضب لغضبك ويرضى لرضاك .

(सहीह मुस्लिम ४४, किताब : फज़ाईले सहाबा (३५),
बाब : फज़ाईले फातिमा, हदीष-९९, सफा-१९०५)
(मुस्नद अहमद ६/२८२, इब्ने साद २/२४)

हज़रत अली رضی اللہ عنہ फरमाते हैं के रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रते फातिमा رضی اللہ عنہا से फरमाया : बेशक अल्लाह तआला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ होता और तेरे खूश होने से खूश होता है ।

(८) (असदुलगाबा फी मारिफतीस्सहाबा इब्ने असीर, जिल्द-५, सफा-५२२)

وأخبرنا يحيى بن محمود أذنا باسناده عن ابن أبى عاصم قال أخبـرنـا عبـدالـلـه بـن عـمـر بن سـالم المفلوج وكان من خيار المسلمين عـنـدى حـدثـنـا حسيـن بـن زيد بن على ابن الحسين بن على ابن أبى طـالب عن عمر بن على عن جعفر بن محمد عن أبيه عن على بن حسين بن على عن حسين بن على:

عـن عـلـى ان الـنـبـى ﷺ قـال لـفـاطـمة ان الله يغضب لغضبك ويرضى لرضاك.

हज़रत अली رضی اللہ عنہ फरमाते हैं के रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रते फातिमा رضی اللہ عنہا से फरमाया : बेशक अल्लाह तआला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे खूश होने से खूश होता है ।

(९) (तहज़ीबुल कमाल फी अस्माइररीजाल - अल मज़ी, जिल्द-३५, सफा-२५०)

وقـال ابـن ابى مليكة عن المسور بن مخرمة: سمعت رسول الله ﷺ يقول: "إنما فاطمة بضعة منى يريبنى ما رابها ويؤ ٔينى ما آذاها".

(मुस्नद अहमद, जिल्द-१, सफा-२९३)
(हाकिम, जिल्द-२, सफा.५९४)

हज़रत मसूर बिन मख़्रमा ﷺ फरमाते हैं के रसूलल्लाह ﷺ ने फरमाया : फातिमा ﷺ मेरे जिगर का टुकडा है, जिस चीज़ से इसे तकलीफ होती है, उससे मुझे भी तकलीफ होती है और जिस चीज़ से इसे नाराज़ी होती है, उस से मुझे भी नाराज़गी होती है ।

وروينا عن على بن الحسين، عن الحسين بن على، عن على، قال: قال رسول الله ﷺ لفاطمة: "إن الله يرضى لرضاك ويغضب لغضبك".

हज़रत अली ﷺ फरमाते हैं के रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत फातिमा ﷺ से फरमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है ।

(बुख़ारी : ७/६७, मुस्लिम (२४४९), अबूदाउद (६०२९), तिरमिज़ी (३८६६))

(१०) (मिझानुल एतिदाल अझ्झहबी, जिल्द-१, सफा-५३५)

2002 – الحسين بن زيد (ق) بن على بن الحسين بن على العلوى، أبو عبدالله الكوفى. عن أبيه وأعمامه: أبى جعفر الباقر، وعمر، وعبد لله، وأم على، وعدة من آل على. وعنه ابناه: إسماعيل، ويحيى، وعبد الرواجى، وأبو مصعب الزهرى، وإبراهيم ابن المنذر، وعلى بن المدينى، وقال: فيه ضعف، وقال أبو حاتم: يعرف وينكر. وقال ابن عدى، وجدت فى هديثه بعض النكرة، وأرجو أنه لا بأس به. ثم قال: أنبأنا أبو يعلى، أبنانا عبدالله بن محمد بن سالم، حدثنا حسين بن زيد، عن على بن عمر على، عن جعفر بن محمد، عن أبيه، عن جده، عن الحسين بن على، عن أبيه، أن النبى ﷺ قال لفاطمة: إن الله يغضب لغضبك، ويرضى لرضاك.

हज़रत हुसैन ﷺ फरमाते हैं के हज़रत अली ﷺ फरमाते हैं के रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रते फातिमा ﷺ से फरमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ुश होने से ख़ूश होता है ।

(११) (मिझानुल एतिदाल अझ्झबी, जिल्द-२, सफा-४९२)

4560– عبدالله بن محمد بن سالم القزاز المفلوج. ما علمت به باسا. قد حدث عنه أبو داؤد والحفاظ إلا انه أبى بما لا يعرف.

الطبراني، حدثنا بشر بن موسى، ومطين، قالا: حدثنا القزاز، حدچنا حسين ابن زيد بن على، وعلى بن عمر بن على، عن جعفر بن محمد، عن أبيه، عن جده، عن الحسين بن على، عن أبيه، قال: قال رسول الله ﷺ لفاطمة إن الله يغضب لغضبك، ويرضى لرضاك. رواه أبو صالح المؤدب فى مناقب فاطمة عن ابن فاذشاة عنه.

हज़रत हुसैन ﵁ फरमाते हैं के हज़रत अली ﵁ फरमाते हैं के रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रते फातिमा ﵂ से फरमाया : बेशक अल्लाह तआला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे खुश होने से ख़ूश होता है ।

(१२) (अल इसाबा फी तमयिज़ीस्सहाबा - इब्ने हजर, जिल्द-८, सफा-२६५)

وفى الصحيحين عن المسور بن مخرمة سمعت رسول الله ﷺ على المنبر يقول: فاطمة بضعة منى يؤذينى ما آذاها ويريبنى ما رابها.

हज़रत मसूर बिन मख़्रमा ﵁ फरमाते हैं के मैंने रसूलल्लाह ﷺ को मिम्बर पर इरशाद फरमाते हुए सुना : फातिमा ﵂ मेरे जिगर का टुकडा है, जिस चीज़ से उसे ईज़ाअ होती है उस से मुझे भी ईज़ाअ होती है और जिस चीज़ से उसे तकलीफ होती है, उस से मुझे भी तकलीफ होती है ।

وعن على بن الحسين بن على عن أبيه عن على قال قال النبى ﷺ لفاطمة إن الله يرضى لرضاك ويغضب لغضبك.

हज़रत हुसैन ﵁ फरमाते हैं के हज़रत अली ﵁ फरमाते हैं के रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत फातिमा ﵂ से फरमाया : बेशक अल्लाह तआला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है ।

(१३) (अल इसाबा फी तमयिज़ीस्सहाबा - इब्ने हजर, जिल्द-८, सफा-२६६)

وأخرج بن أبى عاصم عن عبدالله بن عمرو بن سالم المفلوج بمسند من أهل البيت عن على أن النبى ﷺ قال لفاطمة إن الله يغضب لغضبك ويرضى لرضاك.

अहले बैत के सिलसिला-ए-सनद से रिवायत है के ह़ज़रत अली ﵁ फरमाते हैं के रसूलल्लाह ﷺ ने ह़ज़रते फातिमा ﵂ से फरमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है ।

وأخرج الترمذى من حديث زيد بن أرقم أن رسول الله ﷺ قال على وفاطمة والحسن والحسين أنا حرب لمن حاربهم وسلم لمن سالمهم.

ह़ज़रत ज़ैद बिन अरकम ﵁ फरमाते हैं के रसूलल्लाह ﷺ ने फरमाया : अली ﵁, फातिमा ﵂ और हसन ﵁ व हुसैन ﵁ से जो जंग करे, उस से मेरी जंग है, और जो इन से सुलह करे, उस से मेरी सुलह है ।

(१४) (तहजीबुतहज़ीब - इब्ने हजर, जिल्द-१२, सफा-३९२)

وقال ابن أبى مليكة عن المسور مرفوعا : فاطمة بضعة منى يربنى ما رابها ويؤذينى ما آذاها.

ह़ज़रत मसूर बिन मख़्रमा ﵁ मर्फूअ़न रिवायत करते हैं : फातिमा ﵂ मेरे जिगर का टुकडा है, जिस चीज़ से उसे तकलीफ होती है, उस से मुझे भी तकलीफ होती है, जिस चीज़ से उसे ईज़ाअ होती है, उस से मुझे भी ईज़ाअ होती है ।

وعن على ابن الحسين عن أبيه عن على قال قال رسول الله ﷺ لفاطمة :إن الله تعالى يرضى لرضاك ويغضب لغضبك مناقبها كثيرة جدا.

ह़ज़रत हुसैन ﵁ अपने वालिद ह़ज़रत अली ﵁ से रिवायत करते हैं के रसूलल्लाह ﷺ ने ह़ज़रते फातिमा ﵂ से फरमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है ।

(१५) (इमताउल इस्माइ - अल मक़रिज़ी, जिल्द-४, सफ़ा-१९६)

وقال بشر بن إبراهيم عن الأوزاعي عن يحيى بن أبي كثير، عن أبيه عن أبي هريرة، عن النبي ﷺ قال: إنما سميت فاطمة لأن الله فطم من أحبها من النار۔

وقال علي بن عمر بن علي: إن الله يغضب لغضبك ويرضى لرضاك۔

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. नबी-ए-करीम ﷺ से रिवायत करते हैं के फातिमा रज़ि. के नाम की वजह है के अल्लाह तआ़ला ने उस से मुहब्बत करने वालों को जहन्नम से छुटकारा दे दिया है ।

एक दूसरी रिवायत में है : बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है ।

(१६) (अल मुस्तदरक़ लिल हाकिम - ३/१४१)

حدثنا أبو العباس محمد بن يعقوب ثنا الحسن بن علي بن عفان العامري وأخبرنا محمد بن علي بن دحيم بالكوفة ثنا أحمد بن حاتم بن أبي غرزة قالا:ثنا عبدالله بن محمد بن سالم ثنا حسين بن زيد بن علي عن عمر بن علي عن جعفربن محمد عن أبيه عن علي بن الحسين عن أبيه علي قال:قال رسول الله ﷺ لفاطمة:إن الله يغضب لغضبك ويرضى لرضاك۔

हज़रत अली रज़ि. से रिवायत है के नबी-ए-करीम ﷺ ने हज़रते फातिमा रज़ि. से फरमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है।

(१७) (अल मुअजम अल कबीर लित्तबरानी, जिल्द-१, सफ़ा-४२)

حدثنا محمد بن عبدالله الحضرمي حدثنا عبدالله بن محمد بن سالم القزازحدثنا حسين بن زيد بن علي عن علي بن عمر بن علي عن جعفر بن محمد عن أبيه عن علي بن الحسين عن أبيه علي قال:قال رسول الله ﷺ لفاطمة:إن الله يغضب لغضبك ويرضى لرضاك۔

हज़रत अली ﷺ से रिवायत है के नबी-ए-करीम ﷺ ने हज़रते फातिमा ﷺ से फरमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है ।

(١٨) حدثنا عبدالله بن محمد بن سالم ،حدثنا حسين بن زيد،عن علی بن عمر بن علی،عن جعفر بن محمد،عن أبيه ،عن جده عن الحسين بن علیؓ عن علیؓ قال:قال رسول اللهﷺ:يا فاطمة!إن الله يغضب لغضبك ويرضى لرضاك.

(१८) हज़रत अली ﷺ से रिवायत है के नबी-ए-करीम ﷺ ने फरमाया : अय फातिमा (ﷺ) ! बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है ।

(१९) (जामीउल अहादीष लिस्सीयुती, जिल्द-२३, सफा- ३०९-३२०)

"يا فاطمة ! إن الله يغضب لغضبك ويرضى لرضاك.

أخرجه أبويعلى فى المعجم (١/١٩٠، رقم:٢٢٠) والطبرانى ١/١٠٨،رقم:١٨٢)،قال الهيثمى(٩/٢٠٣)إسناده حسن. والحاكم (٣/١٦٧،رقم:٤٧٣٠)وقال:صحيح الإسناد ،وابن عساكر (٣/١٥٦) وأخرجه أيضاً:ابن أبى عاصم فى الآحادوالمثانى (٥/٣٦٣، رقم:٢٩٥٩)وابن عدى (٢/٣٥١، ترجمة ٤٨١ الحسين بن زيد بن على)وقال: أرجو أنه لابأس به.

अय फातिमा (ﷺ) ! बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ूश होने से ख़ूश होता है । (अबू यअ़ला, तिब्रानी, हाकिम ﷺ, अबू नुअेम फी फज़ाईलुस्सहाबा, और इब्ने अ़साकिर अ़न अ़ली ﷺ ।)

इब्ने अदी ने कहा है के इस हदीष के रावी हुसैन बिन ज़ियाद मेरे नज़दीक इन में कोई हरज नहीं ।

(२०) (तहज़ीबुत्तहज़ीब, जिल्द-२, सफा-२०४)

[٦٠٠] ق ابن ماجة الحسين بن زيد بن على بن ا؛حسين بن على بن أبى طالب الهاشمى ـ

روى عن إسماعيل بن عبدالله بن جعفر وأبيه زيد بن على وأعمامه محمد وعمر وعبدالله وأبى السائب المخزومى وابن جريج وجماعة من آل على وعنه ابناه يحى وإسماعيل والداوردى وأبوغسان الكناني وأبومصعب وعباد بن يعقوب الرواجنى وغيرهم ـ قال ابن أبى حاتم قلت لأبى ماتقول فيه ،فحرك بيده وقلبها يعنى يعرف وينكر ، وقال ابن عدى :أرجو أنه لا بأس به إلا أنى وجدت فى حديثه بعض النكرة،روه له ابن ماجة حديثاً واحداً فى الجنائز ،قلت:روى عنه على المدينى وقال فيه ضعف،وقال ابن معين: لقيته ولم أسمع منه ،وليس بشئ،ووثقه الدارقطنى ،قرأت بخط الذهبى فى وجود التسعين يعنى وفاته وله أكثر من ثمانين سنة ،ونجد من هنا أن الموثقين للحسين بن زيد بن على هم فقط عالم واحد وهو:الدارقطنى ،بينما نجد أن المجرحين له أو لحديثه " الله يغضب لغضب فاطمة ويرضى لرضاها" كثر،وهم :

—ابوحاتم،حرك يده وقلبها اى تعرف أحاديثه وتنكر.

—ابن المدينى قال: فيه ضعف.

—ابن معين: ليس بشئ.

—ابن عدى قال: لا بأس به ،ولكنه أنكر عليه حديثاً.

इस रिवायत के रावी “अल्लाह तआला फातिमा رضی اللہ عنہا के नाराज़ होने से नाराज़ होता है और उन के ख़ूश होने से ख़ूश होता है” हुसैन बिन जैद नामी हैं, जिन के बारे में उ़ल्मा-ए-जरह़ व ता’दील का इख़्तिलाफ है, अबू ह़ातिम رحمۃ اللہ علیہ ने कहा है के "उन की रिवायत मुन्किरो मा’रुफ दोनों त़रह़ की होती हैं ।" इब्ने मदीनी رحمۃ اللہ علیہ ने कहा है : "उन में ज़ोअ़फ हैं", इब्ने मुईन رحمۃ اللہ علیہ ने कहा : "वोह कुछ नहीं ।"

और इब्ने अ़दी ने कहा है : "मुझे उम्मीद है के ला-बाअषा बी ही, अलबत्ता उन की रिवायत में कुछ नकारत (बेज़ारी या नापसन्दगी) पाई जाती है।" जब के दारक़ुतनी तन्हा हैं जिस ने हुसैन बिन ज़ियाद की तौषीक (कौल बयान की सेहत के बारे में यक़ीन दिलाया) की है।

٤٥٦٠ـ

عبدالله بن محمد بن سالم القزاز المفلوج،ماعلمت به بأساً ،قد حدث عنه أبوداؤد والحفاظ إلا أنه أتى بما لايعرف،الطبرانى ،حدثنا بشر بن موسى ،ومطين قالا: حدثنا القزاز حدثنا حسين بن زيد بن على وعلى بن عمر بن على ،عن جعفر بن محمد، عن أبيه عن جده عن الحسين بن على عن أبيه قال:قال رسول الله ﷺ لفاطمة:إن الله يغضب لغضبك ويرضى لرضاك.

हज़रत अली से रिवायत है के नबी-ए-करीम ﷺ ने हज़रते फातिमा से फरमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला तेरे नाराज़ होने से नाराज़ और तेरे ख़ुश होने से ख़ुश होता है।

ज़मीमाह

◈ इस ह़दीष के ह़वाले

1- ह़ाकिम, अल मुस्तदरक, 3:127, रक़म 4760

2- अबू यअ़ला, अल मुअ़जम, 190, रक़म : 220

3- शैबानी, अल आहाद वल मषानी, 5:363, रक़म : 2959

4- त़बरानी, अल मुअजमुल कबीर, 1:108 रक़म : 182

5- त़बरानी, अल मुअजमुल कबीर, 22:104 रक़म : 1001

6- दौलाबी, अड़्ज़ुर्रीयातुत्तताहिरा : 120 रक़म : 235

7- क़ज़्वीनी, अल तदवीन फी अख़बार क़ज़्वीन, 3:11

8- हैशमी ने 'मजमाउ़ल ज़वाइद (9:203)' में कहा है के इसे त़बरानी ने ह़सन इस्नाद के साथ रिवायत किया है।

9- इब्ने जौज़ी, तज़्किरतुल ख़्वास़ : 279

10- इब्ने अषीर, असदुल गाबा फी मारिफतीस्सहाबा, 7:219

11- अ़स्क़लानी, तहज़ीबुत्तहज़ीब, 12:468

12- अ़स्क़लानी, अल इस़ाबा फी तमयीज़ुस्सहाबा, 8:56,57

13- मुह़ब्बु तबरी, जख़ाइरुल उकबा फी मनाकीबी ज़वील क़ुरबा : 82

IMAM JAFAR SADIQ FOUNDATION

(Ahl-e-Sunnat)

Founder & Chairman :

Dr. Shahezadhusain Yasinmiya Kazi

Mugalwada, Kasba, Modasa, Arvalli-383315 (Gujarat)

Mo. 85110 21786